



FuturePointIndia.com

(फ्यूचर पॉइंट द्वारा रचित)

संस्करण: अंग्रेजी | हिन्दी

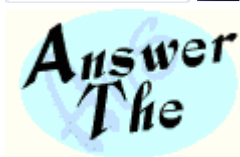
मंगलवार, अगस्त 21, 2012

मुख्यपृष्ठ | आपके विचार | हमसे मिलिए

चैनल

- राशिफल
- ? ज्योतिष संस्था *नया*
- ? ज्योतिष सामग्री *नया*
- परामर्श
- पंचांग
- बायोरेडमिक चार्ट
- व्यापारिक भविष्यवाणी
- पर्व एवं त्योहार
- फ्री डाउनलोड
- मंत्र
- चिकित्सा व ज्योतिष
- फ्यूचर समाचार
- पुस्तकें
- सेवाएं
- ज्योतिष डायरेक्ट्री
- ज्योतिष शिक्षा
- ऑन लाइन प्रश्न
- अध्यात्म
- सेमिनार
- ईपंडित नैटवर्क
- तीर्थयात्रा
- शोध लेख

साइट ढूँढिए



आपका फैसला

क्या मंगल दोष वैवाहिक जीवन को प्रभावित करता है?

- ☐ हाँ
- ☐ नहीं
- ☐ पता नहीं

[पिछले माह के परिणाम](#)

आधुनिक युग में वास्तु शास्त्र का स्वरूप

डॉ. भोजराज द्विवेदी, जोधपुर

प्राचीन काल में बड़े-बड़े राजप्रासाद, किले, देव मंदिर, विद्यालय, तालाब, कूप, बावड़ी, बगीचे से लेकर सामान्य निवास स्थान बनाने के लिए वेद-पुराण और शास्त्रों में वर्णित वास्तु विद्या, स्थापत्य कला को आधार मान कर विचार किया जाता था। धीरे-धीरे भवन निर्माण और स्थापत्य कला विदेशी प्रभाव के ऊटपटांग फैशन में आ कर विकृत होती चली गयी। जनसंख्या की द्रुत गति से होती हुई वृद्धि से बड़े शहरों, महानगरों में भूखंडों की कमी पड़ गयी। बहुमंजिली इमारतें, पलैट की पद्धति विकसित होने लगी। पाश्चात्य जगत की ऊटपटांग चकाचौंध, सीमेंट और लोहे से बने भवनों ने शास्त्र के नियमों की अवहेलना करना प्रारंभ कर दिया। अशास्त्रीय विशाल पलैटों-भवनों में लोग दुःखी, संतप्त एवं उदासीन रहने लगे। मानव जीवन की सार्थकता नष्ट होने लगी। लोग भौतिक जीवन की विलासिता से ऊब गये।

विदेशों में भारतीय वास्तु शास्त्र को लेकर बड़ा भारी चिंतन हुआ, शोध हुए। जर्मनी देश सबसे पहले आगे बढ़ा और वहां भारतीय वास्तु ज्ञान, आंग्ल भाषा एवं अन्य विदेशी भाषाओं में, नवीन परिभाषाओं के साथ, मुखरित हो कर फैलने लगे। अब विदेशों में भी जब कोई भवन बनता है, तो सबसे पहले भवन का मुख्य द्वार किधर हो, जल स्थान कहां बनाएं, पाकशाला में अग्नि स्थान कहां हो, सभी कुछ सोच-विचार कर शयन कक्ष भी उत्तर-दक्षिण चुंबकीय तरंगों को देख कर बनाये जाते हैं, ताकि सोने वाले को भरपूर नींद आ सके और ये सब भारतीय वास्तु शास्त्र के मानक मानदंडों पर आधारित होते हैं।

अमेरिका में वैदिक रीति से

भवन निर्माण :

विश्व में अत्याधुनिक कहे जाने वाले प्रगतिशील वैज्ञानिक देश भी अब वेदों में रुचि लेकर भवन निर्माण करने लगे हैं। अभी हाल में 20 जनवरी 95 को लांस एंजलीस में अमेरिका के कारीगरों ने विश्व के अथर्व वेद के स्थापत्य शास्त्र पर आधारित पहला मकान बना लेने का दावा किया।

श्री किरीट कुमार पटेल अपने उपनगरीय मकान में सूर्योपासना करना चाहते थे। लेकिन उनके पश्चिमाभिमुख मकान में यह इच्छा पूरी नहीं हो पा रही थी। इसलिए उन्होंने अपने भवन निर्माता मोरिस शिलडर से

If you are not able to view the page properly then [Download Hindi Font.](#)

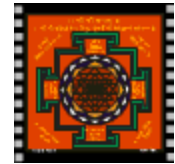
पंजीकृत सदस्य

यूजर आईडी

.पासवर्ड

[पंजीकरण](#) | [संशोधन](#)
[पासवर्ड भूल गये हैं?](#)

ज्योतिष सामग्री



• हमारी
साइट को अपने
Favorites में

आज ही खरीदिए

लियो गोल्ड

डेमो कॉपी 250/-



फ्यूचर पॉइंट द्वारा निर्मित

लियो गोल्ड, विंडो पर
आधारित जन सामान्य के
प्रयोग हेतु सुविधापूर्ण
ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर है।

और

पूर्वाभिमुख मकान बनाने पर जोर दिया और फिलाडेल्फिया का यह भवन निर्माता इस काम में जुट गया। वास्तु शिल्प के तीन हजार वर्ष पुराने वैदिक सिद्धांतों का उन्होंने सहारा लिया। अथर्व वेद में शामिल 1000ई. पूर्व के स्थापना शास्त्र के सिद्धांतों से उन्हें मदद मिली।



लियो-पाम की मेमोरी में ज्योतिषीय प्रोग्राम है, जिससे विभिन्न ज्योतिषीय कार्य किये जा सकते हैं [और](#)

शिलंडर के लिए पटेल के मकान का निर्माण एक आध्यात्मिक अनुभव रहा। वह कहते हैं कि स्थापना शास्त्र में व्यक्ति की अनुभूतियों पर अनुकूल असर डालने वाली शैली का वर्णन है, अर्थात् भोजन कक्ष में भू ख की अनुभूति, बैठक में सामूहिकता की भावना, अध्ययन कक्ष में जागरूकता और शयन कक्ष में विश्राम की अनुभूति जगाने वाले होते हैं। भवन के स्थान एवं प्रारूप का केंद्र ब्रह्म स्थान होता है। शिलंडर ने कहा कि पटेल के मकान में उनकी संस्था ने अथर्व वेद के स्थापत्य शास्त्र के विभिन्न सिद्धांतों का उपयोग किया है, ताकि पटेल अपनी सु खद स्मृतियों को साकार कर सकें।

आधुनिक युग में

वास्तु शास्त्र की उपयोगिता :

गांवों, कस्बों एवं छोटे शहरों में मनुष्य अपनी इच्छानुसार भूखंड खरीद कर, वास्तु शास्त्रों के नियमों के अनुसार, द्वार-खिड़कियां एवं भवन बना सकता है। परंतु महानगरों में बने-बनाये हाउसिंग बोर्ड के मकान एवं फ्लैट खरीदने वालों के पास आमूलचूल परिवर्तन करने का विकल्प नहीं होता। बंबई, मद्रास, कलकत्ता जैसे शहरों से हमारे कार्यालय में अनेक पत्र आते हैं कि जबसे फ्लैट खरीदा, धंधा कमजोर हो गया, पत्नी बीमार रहती है, गर्भपात हो जाते हैं, संतान हाथ नहीं लगती, मानसिक तनाव बढ़ गया है, शादी नहीं हो रही है, बीमारी पीछा नहीं छोड़ रही, अचानक शत्रु बढ़ गये इत्यादि। ऐसे में उस फ्लैट में, कोणात्मक दिशा शोधन कर के, जल स्थान, अग्नि स्थान, पूजा स्थल, शयन कक्ष में पलंग इत्यादि की दिशा बदल कर, सीढ़ियों एवं खिड़कियों की संख्या में हल्का सा परिवर्तन कर के, भवन संबंधी उनके दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदला जा सकता है।

कार्यालय बीम के नीचे नहीं :

पुराणों में आपने हिरण्यकश्यप एवं प्रह्लाद की कथा तो पढ़ी ही होगी। हिरण्यकश्यप को वरदान प्राप्त था कि उसकी मृत्यु न दिन में होगी, न रात में, न नर से होगी न नारी से, न आकाश में, न पाताल में, न पृथ्वी पर, न जल में, न घर में होगी, न घर के बाहर। हिरण्यकश्यप की मृत्यु संध्या काल में हुई। संध्या काल की गणना न घर के अंदर होती है, न घर के बाहर। अतः तबसे पौराणिक काल में, लगभग ईसा से 2000 वर्ष पूर्व से, पाट, गाडर एवं बीम के नीचे नहीं बैठा जाता, न ही संध्या काल में किसी भवन का निर्माण होता है। बीम के नीचे बैठना मृत्यु को दावत देना, आयु को क्षीण करना एवं अशुभ को आमंत्रित करना माना जाता है। हमारे अनुभव में यह भी आया कि बीम के नीचे कार्यालय, धूमने वाली कुर्सी, गद्दी या आसन का होना गलत है। यह प्रतिकूल परिस्थितियों को उत्पन्न करता है एवं चलते कार्य में रुकावट डालता है।

कुछ समय पहले एक उद्योगपति मेरे पास आये। उन्होंने बताया कि अनेक प्रयत्न करने के बाद भी उनका कारखाना बराबर नहीं चल रहा है, जबकि मजदूरों को खुश करने की हर प्रकार की कोशिश की जाती थी। समस्या की गंभीरता देखते हुए मैं स्वयं उनका कारखाना देखने गया। देखा कि कारखाने के केंद्रीय हाल में, जहां कर्मचारी बैठ कर कार्य करते थे, बीम थी। बीम या गाडर खुद तनाव में रहता है और अपने नीचे बैठने वालों को भी तनावग्रस्त रखता है; ठीक से काम नहीं करने देता। वहां से हटते ही कर्मचारी एवं मजदूर ठीक समय पर आने लगे। तबसे ले कर आज तक उस कारखाने में मजदूरों की समस्या नहीं आयी। एक छोटे से परिवर्तन ने डूबते हुए उद्योग को बचा लिया। यह है वास्तु शास्त्र की सार्थकता का प्रत्यक्ष उदाहरण।

नगरों का सही वास्तु :

विश्व के मानचित्र को देखेंगे, तो पता चलेगा कि श्रीलंका की वास्तु बनावट त्रिकोणात्मक है। अतः जीवनपर्यंत उग्रवादियों द्वारा वहां युद्ध होता रहेगा। इसी प्रकार से चंडीगढ़ का वास्तु ठीक नहीं। वहां पर भी लड़ाई-झगड़ा, कलह, बेचैनी एवं अशांति स्थायी रूप से वास कर चुकी है। सवाई जयसिंह ने जयपुर नगर को वास्तु सिद्धांतों के अनुसार बनवाया। स्वतंत्र भारत में जयपुर न केवल राजस्थान की राजधानी बनी, अपितु वहां बने प्राचीन किले और भवनों को आज दिन तक खरोंच तक नहीं आयी। कोई बस्ती नहीं लूटी गयी, न ही कोई मंदिर-मस्जिद, किला भग्न स्थिति में है। अपितु वहां के स्थायी निवासी ज्यादा सुखी एवं संपन्न हैं।

जिस नगर के ईशान्य में नदी-तालाब, या समुद्र हो तथा दक्षिण भाग खूब उन्नत हो, वह नगर संपूर्ण वैभवतासंपन्न एवं व्यापारिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र होता है। भारत में बंबई एवं विश्व के नक्शे पर अमेरिका इस वास्तु दृष्टांत के अनुपम उदाहरण हैं। संसार प्रसिद्ध तिरुपति बालाजी के मंदिर की ईशान्य दिशा में पुष्करिणी नदी है तथा अन्य सभी दिशाओं में उन्नत पर्वत हैं। यह मंदिर भारत ही में नहीं, बल्कि संसार में वास्तु कला का अनुपम उदाहरण है। फलतः वह संसार का सबसे धनी और ऐश्वर्यसंपन्न मंदिर है, जिसकी मासिक आय करोड़ों में है।

द्वार वेध पर विशेष ध्यान:

भवन निर्माता एवं भवन स्वामी दोनों को द्वार वेध का विशेष ध्यान रखना चाहिए, अन्यथा दुष्परिणाम भयंकर हो सकते हैं, जो दोनों को भोगने पड़ेंगे।

हमारे एक परिचित ने 20-25 लाख रुपये खर्च कर के शानदार कोठी बनायी। परंतु मुख्य द्वार के सामने 'सीमाबंदी के लिए दीवार' थी। उस पर एक नल लगा था। सामने 25 फुट चौड़ा मार्ग था, जिसके किनारे पीपल का पेड़ था। पीपल के पेड़ के नीचे हैंड पंप था। इस बात पर न तो भवन स्वामी ने ध्यान दिया, न निर्माता-ठेकेदार ने। आलीशान भवन बन कर तैयार हो गया तथा शुभ मुहूर्त में प्रतिष्ठा हुई। गृह प्रवेश का अनुष्ठान मेरे हाथों संपन्न होने जा रहा था। मेरा माथा ठनका। मैंने गृह स्वामी का ध्यान इस द्वार वेध की ओर आकृष्ट किया और सावधान

किया कि द्वार वेध का दुष्परिणाम गृह स्वामी तथा गृह निर्माता दोनों की संतानों एवं पीढ़ियों पर पड़ता है। पर पाश्चात्य संस्कृति, प्रीति भोज एवं डिस्को डांस में उलझे लोगों को ऐसी बातें सुनने और समझने की फुर्सत कहां है?

गृह प्रवेश के दिन हल्की (गुलाबी) सर्दी का मौसम था। रात को खाने के बाद आइसक्रीम खिलायी जा रही थी। गृह स्वामी के एक मात्र 14 वर्षीय पुत्र ने जम कर आइसक्रीम खायी। फलतः उसे बुखार आ गया। तीन दिन तक बुखार रहा। इसे सामान्य घटना समझ कर घरेलू उपचार किया गया। बुखार उतारने की गोली देते ही दिन को बुखार गायब, मगर रात को फिर बुखार। कभी-कभी दो-तीन दिन तक बुखार नहीं आता और रात को पुनः बुखार आ जाता। यह क्रम डेढ़ माह तक चलता रहा। बच्चे का स्वास्थ्य एकदम गिर गया। जब लगा कि बुखार असाध्य है, तो डाक्टर को बुलाया गया। उसने जब सभी प्रकार के परीक्षण किये तथा छाती का एक्सरे लिया, तो पता चला कि फेफड़ों में भारी पानी जम गया है। उसी दिन शल्यक्रिया कर के डेढ़ लीटर पानी फेफड़ों से निकाला गया। लड़के की जान बच गयी, पर एक वर्ष तक इलाज चलता रहा। प्रति सप्ताह भारी इंजेक्शन लगते रहे। उधर ठेकेदार के दो बच्चे अचानक दुर्घटना के शिकार हो गये। बच्चे अस्पताल में भर्ती थे तथा जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष कर रहे थे। इस घटना को मात्र संयोग या वहम तो नहीं कहा जा सकता। फिर मैंने स्वयं जा कर द्वार वेध को ठीक कराया। तब जा कर गृह स्वामी एवं ठेकेदार दोनों को शांति मिली।

अतः कभी-कभी छोटी-छोटी बातें असामान्य रूप से भयंकर कष्टकारक बन जाती हैं एवं भावी पीढ़ी को प्रभावित करती हैं। समझदार व्यक्ति को चाहिए कि मुख्य द्वार के सामने पेड़-पौधे, दीवार का कोना, खंभा, खाई, कुआं, कीचड़, गली, मंदिर की छाया, पीपल की छाया, कोई कब्र, लंबी गली, किसी प्रकार का बंद या बाधाएं नहीं होने चाहिए। यह भी विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि मुख्य द्वार खोलते या बंद करते समय किसी भी प्रकार की अप्रिय आवाज नहीं होनी चाहिए। मुख्य द्वार सही है, तो घर में ऋद्धि-सिद्धि, सब प्रकार के मंगल कार्यों की वृद्धि होती है, घर के सदस्यों की रक्षा होती है एवं वंश बेल आगे बढ़ती है।

व्यावहारिक वास्तु शास्त्र:

वास्तु शास्त्र की महिमा जैसे-जैसे बढ़ती गयी, वास्तुविद अव्यावहारिक होते चले गये। अभी एक माह पूर्व जयपुर में एक वास्तु गोष्ठी आयोजित हुई। मुंबई के वास्तुविद बुलाये गये। श्रोताओं के लिए प्रवेश शुल्क 1100/रुपये मात्र। प्रवेश शुल्क के साथ एक पुस्तक लेनी अनिवार्य थी। पुस्तक के पृष्ठ 35-40 के बीच और मूल्य 150/रुपये मात्र। यदि कोई उसकी फोटो कापी कराये, तो यह संपूर्ण पुस्तक मात्र 12/रुपये में मिल जाती। यह कहना अप्रासंगिक ही होगा। फिर भी प्रबुद्ध पाठकों को यह बताना जरूरी है कि तथाकथित पुस्तक वास्तु शास्त्र की प्रचलित प्रसिद्ध ग्रंथों के चुनिंदे चित्रों की फोटो कापी मात्र थी। अस्तु, यहां लगभग पांच सौ जिज्ञासु व्यक्तियों की भीड़ थी। तथाकथित वास्तु शास्त्रविद जिज्ञासु सज्जनों को पश्चाताप एवं प्रायश्चित की मधुर स्मृति दे कर, एक दिन में पांच लाख रुपया कमा

कर, चलते बने।

अभी हाल ही में मेरे एक परिचित मित्र के साथ इससे भी खतरनाक ६।८ टना घटित हुई, जिसे सुन कर एवं देख कर मैं भी स्तब्ध रह गया। मेरे इस परिचित की मुजफ्फर नगर के औद्योगिक क्षेत्र में बड़ा कारखाना है। दो-तीन साल से ग्रह दशाएं प्रतिकूल चल रही हैं। किसी ने बता दिया कि कारखाने का वास्तु खराब है। अब वह सज्जन चेन्नई, बंगलूर, मुंबई एवं विदेशी पतों पर वास्तु शास्त्र मर्मज्ञों से संपर्क साधने लगे। कारखाने का दौरा करने हेतु 'विजिटिंग चार्ज' कोई दस हजार मांग रहा है, कोई बीस, कोई यात्रा का किराया अलग से मांग रहा है, कोई कुछ, तो कोई कुछ। खैर, ले-दे कर चेन्नई से ही कोई सज्जन (नाप गोपनीय) बड़े नाज-नखरे के साथ, आये। यात्रा व्यय, 'विजिटिंग चार्ज', तीन दिन प्रवास के दौरान होटल-टैक्सी का बिल, कुल पचास हजार रुपये का निजी बिल ले गये और कारखाने में लगभग सात लाख का नुकसान करा गये। कारखाने में प्रवेश करते ही उन्होंने कहा: श्रमिक आवास, शौचालय स्नान घर गलत दिशा में बने हैं। उन्हें फौरन तोड़ो। हथौड़े- बुलडोजर चलवा दिये। कार्यालय तुड़वाया। गोदाम की तीस फुट ऊंची दीवार तोड़ने एवं वापस सुधारने में सात लाख रुपये खर्च हो गये। कुल आठ महीने व्यतीत होने पर कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई, तो उस मित्र महोदय ने सारी कहानी सुनाते हुए मुझे लंबा-चौड़ा पत्र लिखा। दूरभाष पर उनसे वार्ता हुई। मैं मुजफ्फरनगर गया। मारवाड़ी में कहावत प्रसिद्ध है:

'नेडो तीर्थ गांव गुरु, गलियों हंदा देव।

इतरा री महिमा नहीं, संत भाखै सहदेव।।'

अर्थात् अपने गांव के नजदीकी तीर्थ का गांव में कोई महत्व नहीं होता। अपनी जाति एवं गांव के विद्वान् का, उसकी जाति एवं उसके गांव में, कोई विशेष महत्व नहीं होता।

काशी की गली-गली में संत एवं सन्यासी, भगवे और पीले वस्त्र पहन कर, घूमते हैं। पर उनका वहां कोई महत्व नहीं। परंतु यदि काशी से कोई मूर्ख व्यक्ति भी पीले वस्त्र पहन कर जोधपुर आ जाए, तो उसे, महाविद्वान समझ, लोगों में चरण स्पर्श, स्वागत-सत्कार की होड़ सी लग जाती है। यही हाल यहां था। चेन्नई से आये अधिक रुपये मांगने वाले, अधिक भयग्रस्त करने वाले, उस वास्तु शास्त्री का नाम अनंत महिमा से मंडित था।

वस्तुतः उस कारखाने का ईशान बिगड़ा हुआ था। अष्ट दिशाओं में ईशान अत्यंत महत्वपूर्ण है। होटलों, दुकानों, बहुमंजिली इमारतों, कारखानों, उद्योगों एवं वाणिज्यिक क्षेत्रों में ईशान कोण की रक्षा बड़ी सावधानी से करनी होती है। ईशान में वास्तु संबंधी त्रुटियां हों और शेष सभी दिशाओं में वास्तु संबंधी सभी विशेषताएं भले ही समाहित हों, पर उस उद्योग-कारखाने का विकास नहीं होगा। ऐसे कारखाने में सारी आमदनी खर्च हो जाएगी। हाथ में एक पैसा भी नहीं बचेगा; केवल श्रम मात्र ही बचेगा। लाखों-करोड़ों की आमदनी एवं इतना ही खर्च, चहलपहल दिखलायी देने पर भी, 'बैलेंस शीट' शून्य ही रहेगी।

कुछ विशेष सुझाव इस प्रकार हैं :

- ध्यान रहे कि कारखाना—उद्योग, दुकान, होटल एवं वाणिज्यिक क्षेत्र का ईशान कोण कभी भी अन्य दीवारों से ऊंचा नहीं होना चाहिए।
- कारखाने के ईशान कोण को छोड़ कर, अन्य किसी भी दिशा में कुएं अथवा गड्ढे हों, तो उसके गृह स्वामी को दुष्परिणामों का शिकार होना ही पड़ेगा।
- ईशान दिशा में कोई भी त्रुटि दरार, गड्ढा, या भग्नावशेष हो, तो गृह स्वामी—उद्योगपति की संतान विकलांग होगी।
- ईशान में शौचालय हो, तो गृह कलह होगा, कारखाने में मजदूर लड़ेंगे, कारखाने का स्वामी दुश्चरित्रता एवं दीर्घ व्याधियों का शिकार होगा।
- ईशान दिशा में रसोई घर हो, तो निरंतर गृह कलह एवं धन का क्षय होगा।
- ईशान दिशा में कूड़ा—कचरा, अथवा पत्थरों का ढेर, अटाला—कबाड़े के सामान, भूल कर भी न रखें; अन्यथा भूस्वामी के लिए शत्रुता, आयु क्षीणता एवं दुश्चरित्रता उत्पन्न होंगी।

[FuturePointIndia.com](#) के बारे में | [हमको विज्ञापन दें](#) | [आपके विचार](#) | [हमसे मिलिए](#) | [मुखपृष्ठ](#)

© 1998-2002 FuturePointIndia.com (P) Ltd. - All rights reserved - [Disclaimer](#) - [Privacy Policy](#)

ऊपर

फ्यूचर पॉइंट द्वारा प्राधिकृत साइट